Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Refereed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-2; Issue-2 (April-June) 2026
Page No.- 01-03
©2026 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's:

Dr. Judy Lalengvari
Principal, Mizoram Hindi Training College.

Corresponding Author :

Dr. Judy Lalengvari
Principal, Mizoram Hindi Training College.

हिंदी काव्य में पिता का स्थान : एक उपेक्षित पक्ष का पुनर्मूल्यांकन

सारांश : हिंदी साहित्य में पारिवारिक संबंधों का चित्रण अत्यंत समृद्ध और भावनात्मक रहा है। विशेषतः माँ के प्रेम, ममता और करुणा का विस्तृत एवं प्रभावी वर्णन मिलता है, किंतु पिता की भूमिका—जो समान रूप से महत्वपूर्ण है—अक्सर सीमित रूप में ही अभिव्यक्त हुई है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी काव्य में पिता के स्थान का पुनर्मूल्यांकन करना है। इसमें पिता के त्याग, अनुशासन, धैर्य और मौन भावनात्मक योगदान को रेखांकित किया गया है। साथ ही यह भी प्रतिपादित किया गया है कि साहित्य में भावनात्मक अभिव्यक्ति के पारंपरिक दृष्टिकोण के कारण पिता के योगदान को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया। इस अध्ययन के अंत में एक मौलिक काव्य प्रस्तुत किया गया है, जो पिता के महत्व और उनके प्रति सम्मान को सशक्त रूप से व्यक्त करता है।

मुख्य शब्द : पिता, हिंदी काव्य, पारिवारिक संबंध, भावनात्मक अभिव्यक्ति, पुनर्मूल्यांकन।

परिचय : भारतीय संस्कृति में परिवार को सामाजिक संरचना की मूल इकाई माना गया है, जहाँ माता और पिता दोनों की भूमिकाएँ समान रूप से महत्वपूर्ण होती हैं। हिंदी साहित्य में माता की ममता, करुणा और स्नेह को अत्यधिक भावनात्मक और काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास, सूरदास तथा आधुनिक कवियों ने माँ के वात्सल्य को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है।

इसके विपरीत, पिता की भूमिका—जो परिवार के संरक्षक, मार्गदर्शक और अनुशासनकर्ता के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है—साहित्य में अपेक्षाकृत कम स्थान प्राप्त करती है। यह असंतुलन केवल साहित्यिक प्रवृत्ति का परिणाम नहीं है, बल्कि समाज में व्याप्त भावनात्मक धारणाओं का भी द्योतक है, जहाँ पिता को कठोर और माँ को कोमल रूप में देखा जाता है।

हिंदी काव्य में पारिवारिक संबंधों की परंपरा : हिंदी काव्य में पारिवारिक संबंधों का चित्रण प्राचीन काल से ही होता आया है। भक्ति

काल में ईश्वर और भक्त के संबंध को माता-पिता के रुपक में प्रस्तुत किया गया, जिसमें माता का रुप अधिक प्रभावी रहा। आधुनिक काल में भी पारिवारिक संबंधों पर आधारित काव्य में माँ की भूमिका को अधिक प्रमुखता मिली है।

नामवर सिंह (2011) के अनुसार, हिंदी काव्य में भावनात्मक अभिव्यक्ति का केंद्र प्रायः कोमल संवेदनाएँ रही हैं, जिनसे माँ का चरित्र अधिक मेल खाता है। इसके विपरीत, पिता का व्यक्तित्व अनुशासन, जिम्मेदारी और त्याग से जुड़ा हुआ है, जो कम अभिव्यक्तिपूर्ण माना गया।

पिता की भूमिका: एक बहुआयामी दृष्टिकोण : पिता केवल परिवार का आर्थिक आधार नहीं होता, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, संरक्षक और प्रेरक शक्ति भी होता है। उसकी भूमिका निम्नलिखित आयामों में देखी जा सकती है—

1. आर्थिक एवं संरचनात्मक भूमिका :

पिता परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरंतर प्रयास करता है। वह अपने व्यक्तिगत सुखों का त्याग कर परिवार की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करता है।

2. नैतिक एवं सामाजिक मार्गदर्शन :

पिता बच्चों को अनुशासन, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देता है। वह जीवन के कठिन निर्णयों में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

3. भावनात्मक योगदान :

यद्यपि पिता की भावनाएँ प्रकट रुप में कम दिखाई देती हैं, किंतु वह अपने परिवार के प्रति गहरी संवेदनाएँ रखता है। उसका प्रेम मौन होता है, परंतु अत्यंत गहरा और स्थायी होता है।

4. प्रेरणा और आत्मनिर्भरता का स्रोत :

पिता बच्चों को आत्मनिर्भर बनने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है।

साहित्य में पिता की उपेक्षा के कारण :

हिंदी साहित्य में पिता की अपेक्षाकृत कम उपस्थिति के पीछे कई कारण हैं—

भावनात्मक रुढ़ियाँ : समाज में यह धारणा है कि भावनाएँ केवल माँ से जुड़ी होती हैं।

काव्यात्मक प्रवृत्तियाँ : कवि कोमल भावनाओं को अधिक महत्व देते हैं।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण : पिता को अनुशासन और कठोरता का प्रतीक माना जाता है।

अभिव्यक्ति की सीमाएँ : पिता का मौन स्वभाव उसकी भावनाओं को व्यक्त होने से रोकता है।

रामचंद्र शुक्ल (2002) के अनुसार, साहित्य समाज का दर्पण होता है, अतः समाज में जो दृष्टिकोण प्रचलित होता है, वही साहित्य में भी प्रतिबिंबित होता है।

पिता के स्थान का पुनर्मूल्यांकन: आवश्यकता और दिशा :

आधुनिक समय में पारिवारिक संरचना और सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन हो रहा है। अब पिता की भूमिका केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह बच्चों के भावनात्मक विकास में भी सक्रिय भागीदारी निभा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में आवश्यक है कि—

हिंदी काव्य में पिता के भावनात्मक पक्ष को अधिक स्थान दिया जाए।

पारिवारिक संबंधों का संतुलित चित्रण प्रस्तुत किया जाए।

नए कवियों को इस विषय पर लेखन के लिए प्रेरित किया जाए।

काव्य प्रस्तुति :

यह तो सब कहते–लिखते हैं,
माँ से बढ़कर कोई नहीं जीवन में।
क्या किसी ने यह सोचा है,

है पिता की बड़ी जगह भी।
पिता एक पत्नी का अस्तित्व,
बच्चों का निर्माता, कुल की इज़्ज़त,
फिर क्यों माता ही माता का ज़िक्र?
क्यों न हो सके कविता उस पर,
जैसे छूटा उसका ज़िक्र?
माता अपनी प्यारी है तो,
करो पिता पर भी तुम फ़ख्र।
पढ़ो पिता के मन को तुम,
करते त्याग अपना सुख,
हर लेते हम सबका दुख।
कोई मुसीबत आए किसी पर,
हाथ पिता के देते धीरज!!!
हर दुख सबका सहना कर लें,
छायादार वृक्ष हैं पितृ।
हाय! महान कवि, लेखक, गायक,
मैं पूछ रही तुमसे फिर—
क्या तुम कभी पिता नहीं थे?
पिता नहीं तो फिर कैसे कवि हो गए,
गायक बन गए, उच्च कोटि के!!!
माँ की जितनी जगह जीवन में,
उतनी जगह पिता की भी है।

निष्कर्ष : पिता और माता दोनों ही परिवार के आधार स्तंभ हैं। हिंदी साहित्य में जहाँ माता को अत्यधिक महत्व दिया गया है, वहीं पिता की भूमिका को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया है। प्रस्तुत अध्ययन इस असंतुलन को उजागर करता है और यह सुझाव देता है कि भविष्य में हिंदी काव्य में पिता के योगदान को भी समान रूप से महत्व दिया जाना चाहिए। इससे न केवल साहित्य समृद्ध होगा, बल्कि समाज में भी संतुलित दृष्टिकोण विकसित होगा।

References (संदर्भ सूची) :

1. शुक्ल, रामचंद्र (2002). हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद (2000). हिंदी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. सिंह, नामवर (2011). कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. वर्मा, रामविलास (1995). हिंदी साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. त्रिपाठी, कृष्णदेव (2008). आधुनिक हिंदी काव्य में सामाजिक चेतना. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

•